क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

THE MENTORING PROJECT

टूटे हुए भरोसे को चंगा करना: रिश्तों में बाइबल-आधारित मेल-मिलाप

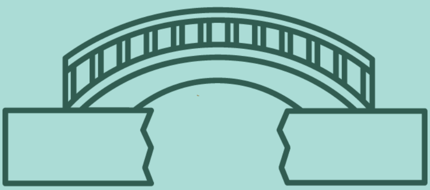

JAIME OWENS
(जैमी ओवेन्स)

टूटे हुए भरोसे को चंगा करना: रिश्तों में बाइबल-आधारित मेल-मिलाप

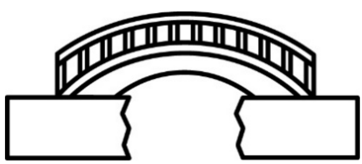

JAIME OWENS
(जैमी ओवेन्स)

विषय-सूची

विषय-सूची 3

परिचयः 4

टूटे रिश्तों का आरम्भ 6

टूटे हुए रिश्तों का घमण्ड 11

टूटे हुए रिश्तों के बड़े दाँव 16

सुसमाचारः बहाली के लिए हमारा मार्गदर्शक 21

जब टूटे हुए रिश्ते बहाल करना कठिन हो 31

निष्कर्षः कैसे आरम्भ करें 35

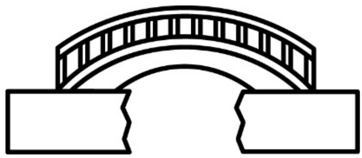

परिचय:

जब मसीही परिपक्वता की बात आती है, तो टूटे हुए रिश्तों को बुद्धिमानी से सम्भालना एक विशिष्ट प्रयास लग सकता है। हालाँकि, यह एक ऐसी बात है, जिसकी सभी मसीहियों को विश्वासयोग्यता के साथ खोज करनी चाहिए, चाहे वे इस यात्रा में कितना भी आगे बढ़ चुके हों। बोस्टन शहर की एक कलीसिया में दस वर्षों से अधिक समय तक पास्टर के रूप में, मैंने देखा है कि हमारी मण्डली के सामने आने वाली सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह जानना है कि जब रिश्ते टूट जाते हैं और बिखर जाते हैं, तो क्या करना चाहिए। पवित्रशास्त्र कलीसिया को मसीह की देह बताता है और इसके अंगों के बीच फूट की निरर्थकता के बारे में बात करता है। जब विशेषकर विश्वासियों के बीच टूटे रिश्तों की बात आती है, तो बहुत कुछ दाँव पर लगा होता है। और स्वाभाविक रूप से एक गहरा प्रश्न उठाता है कि जब हम वास्तव में रिश्तों की चोट के बीच खड़े होते हैं, तो *मेल-मिलाप का क्या अर्थ होता है?* पवित्रशास्त्र में, मेल-मिलाप मिलजुल कर रहने के एक सौम्य प्रयास से कहीं बढ़कर है—यह परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ, पाप के द्वारा तोड़े गए रिश्ते को बहाल करने का जानबूझकर किया गया कार्य है। इस जीवन कौशल मार्गदर्शिका से मेरी आशा टूटे हुए रिश्तों को सुधारने के लिए पवित्रशास्त्र की नींव रखना है, ताकि सुसमाचार, जो कि बहाली की सोची जा सकने वाली सबसे अद्भुत तस्वीर है, हमारे जीवनों में प्रकट हो।

बाइबल-आधारित मेल-मिलाप में हम देखते हैं कि टूटे हुए रिश्तों का मूल कारण अक्सर परमेश्वर के साथ टूटा हुआ रिश्ता होता है। मसीही परम्परा में मेल-मिलाप का संस्कार इन टूटे हुए रिश्तों को सम्बोधित करने का एक औपचारिक साधन प्रदान करता है, जिससे विश्वासियों को परमेश्वर और एक दूसरे के साथ अपने संगति को बहाल करने का अवसर मिलता है। इस संस्कार के माध्यम से, हम

मसीह की क्षमा की चंगा करने वाली सामर्थ्य का अनुभव कर सकते हैं, जो हमें क्षमा प्रदान करने और अपने रिश्तों में मेल-मिलाप की खोज करने में सक्षम बनाती है।

पहले भाग में, मैं तर्क देता हूँ कि हमारे टूटे रिश्तों का मूल कारण परमेश्वर के साथ हमारा टूटा हुआ रिश्ता है। दूसरा भाग दर्शाता है कि कैसे अक्सर हमारे टूटे हुए रिश्तों के केन्द्र में घमण्ड होता है और इससे निपटने के लिए क्या किया जाना चाहिए। तीसरा भाग इस बात के लिए बाइबल आधारित तर्क प्रस्तुत करता है कि मसीहियों को बहाली की खोज क्यों करनी चाहिए। चौथा भाग बहाली के लिए हमारे आदर्श और प्रेरणा के रूप में सुसमाचार को प्रस्तुत करता है। और अन्त में, पाँचवाँ भाग बहाली की कुछ श्रेणियों को रखता है और बताता है कि जब बहाली कठिन हो तो क्या करना चाहिए।

इस जीवन कौशल मार्गदर्शिका का मुख्य लक्ष्य विश्वासियों के बीच के जटिल रिश्ते है। यह प्रशिक्षण देने के सन्दर्भ में सबसे उपयोगी है, जिससे कि इस बात पर चर्चा आरम्भ की जा सके कि मसीहियों के बीच टूटे हुए रिश्ते क्यों आम हैं, और बहाली की खोज में सुसमाचार हमें कैसे प्रेरित करता है। यदि यह मार्गदर्शिका मसीही जीवन के इस चुनौतीपूर्ण परन्तु फलदायी हिस्से पर थोड़ा और अधिक बुद्धि का प्रकाश डाल पाए, तो मेरी प्रार्थनाएँ पूरी हो जाएँगी। अपने लोगों की एकता के द्वारा परमेश्वर महिमा पाए!

1

टूटे रिश्तों का आरम्भ

पाप के तोड़ने वाले प्रभाव

परमेश्वर के साथ शान्ति और एक दूसरे के साथ शान्ति आपस में अत्यन्त गहराई से जुड़े हुए हैं। सबसे पहले टूटे रिश्ते पर, अर्थात् परमेश्वर और हमारे पहले माता-पिता, आदम और हव्वा के बीच के रिश्ते पर कुछ देर ध्यान देने से हमें बहुत मूल्यवान समझ मिलती है। पाप और उसका श्राप ही वह कारण है, जिससे मित्रता टूट जाती है, विवाह बिखर जाते हैं, और कलीसियाएँ झगड़ों से हिल जाती हैं। हमारे अपने जीवनों में टूटे हुए रिश्ते बहाल करने की कोई भी आशा, परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते बहाल करने पर ही टिकी होनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता, तो हम एक प्राणघाती बीमारी पर बस एक पट्टी लगा रहे होंगे।

संसार में पाप के आने से पहले, अदन की वाटिका सम्बन्ध में बने रहने वाले तालमेल के लिए जानी जाती थी। परमेश्वर एवं आदम के बीच, और उसके बाद आदम एवं उसकी पत्नी के बीच भी तालमेल था। परन्तु जैसे ही आदम और हव्वा ने वह मना किया हुआ फल खाया, परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ उनका रिश्ता बदल गया। इससे पहले कि परमेश्वर उनसे प्रश्न करता और पाप का श्राप देता, हम देखते हैं कि आदम और हव्वा अपने नंगेपन को अंजीर के पत्तों और लंगोट से ढकने का प्रयास करते हैं। स्पष्ट रूप से पाप के पीछे-पीछे शर्म भी आदम और हव्वा के विवाह में घुस आई थी। पाप का श्राप उस एक-तन वाली एकता में भी तनाव उत्पन्न कर देता है, जिसका आनन्द आदम और हव्वा असल में ले रहे थे। यह दु:ख की बात है कि आज टूटे हुए विवाहों में यह तनाव आसानी से देखा जा सकता है: “तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा करेगा” (उत्प. 3:16ब)।

आदम और हव्वा को वाटिका से निकाले जाने से पहले, और अधिक बिखराव के प्रदर्शन के रूप में, उन्होंने अपने पाप का दोष एक दूसरे पर, साँप पर, और यहाँ तक कि परमेश्वर पर भी लगाया। पाप के उस दृश्य में आने के बाद स्थिति पहले जैसे नहीं रही, और वाटिका की दूसरी तरफ जाकर तो वे और भी अधिक बुरे हो गए। आदम और हव्वा के पुत्र, हाबिल और कैन ने परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए। समस्या यह हुई कि उनमें से एक का बलिदान परमेश्वर को दूसरे से अधिक पसन्द आया। और इसका परिणाम क्या हुआ? कैन ने क्रोध से भरकर अपने भाई, हाबिल की हत्या कर दी। इसी अध्याय में, हमारा परिचय कैन के वंशज लेमेक से होता है, जो उत्पत्ति 4:23-24 में अपनी कई पत्नियों के सामने संसार का पहला हत्या-गीत गाता है:

हे आदा और हे सिल्ला, मेरी सुनो;
हे लेमेक की पत्नियो, मेरी बात पर कान लगाओ:
मैं ने एक पुरुष को जो मुझे चोट लगाता था,
अर्थात् एक जवान को जो मुझे घायल करता था, घात किया है।
जब कैन का बदला सातगुणा लिया जाएगा,
तो लेमेक का सतहत्तरगुणा लिया जाएगा।

लेमेक का गीत प्रतिशोध लेने में एक चौंकाने वाला आनन्द और ऐसा घमण्ड दिखाता है, जो पहचान का भूखा है, कि मानो हत्यारे ने कोई बहुत अच्छा काम किया हो। स्पष्ट रूप से हत्या—जो रिश्तों में आए बिखराव का सबसे बड़ा रूप है—उत्पत्ति की पुस्तक के आरम्भिक अध्यायों में कर्करोग अर्थात् कैंसर की तरह फैलती जाती है। अध्याय 6 में, परमेश्वर पूरे संसार में जलप्रलय लाने की मंशा बताते हुए नूह से बात करता है: "सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि *उनके कारण पृथ्वी उपद्रव* से भर गई है" (उत्प. 6:13)। जब कोई पतन के बाद अदन की पूर्वी दिशा में देखता है, तो वहाँ की तस्वीर सूनी लगती है। परमेश्वर के विरुद्ध किए गए पाप से उपद्रव का फल उत्पन्न होता है। परमेश्वर के साथ बिखराव का यह प्रारूप, आगे चलकर मनुष्यों के बीच में भी बिखराव लाता है और यह मानवीय भ्रष्टता की एक विशेष निशानी है और बाइबल के मुख्य विषयों में से एक है।

बाइबल में क्षमा का क्या अर्थ है? बाइबल में पाई जाने वाली क्षमा का अर्थ केवल किसी को उसके किए गए अपराध से मुक्त करने का कार्य नहीं है, बल्कि इसका अर्थ बाइबल-आधारित मेल-मिलाप

का एक गहरा काम है, जो रिश्तों को बहाल कर देता है। मसीही परम्परा में मेल-मिलाप के संस्कार की जड़ें इसी विचार में मिलती हैं, जो पाप के कारण आए बिखराव को, चाहे वह हमारे और परमेश्वर के बीच हो, या एक दूसरे के बीच हो, ठीक करने का एक औपचारिक तरीका देता है।

पाप का आकाश की ओर लक्ष्य

हम यह ध्यान देने के लिए दूसरी जगहों पर भी देख सकते हैं कि कैसे दूसरों के विरुद्ध किया गया पाप, असल में परमेश्वर के विरुद्ध किए गए पाप से जुड़ा हुआ होता है। भजन संहिता अध्याय 51 का उपरिलेख हमें बताता है कि दाऊद ने यह भजन तब लिखा था, जब नातान नबी ने उसे बतशेबा के साथ व्यभिचार करने और उसके पति ऊरिय्याह की हत्या करने के लिए फटकारा था। उसमें लिखा है: *"दाऊद का भजन, जब नातान नबी उसके पास इसलिये आया कि वह बतशेबा के पास गया था।"* यह कहना कि उसके पाप ने रिश्तों में भारी विनाश मचा दिया था, यह उस बात को कम करके आँकना होगा। उसका परिवार तबाह हो गया था और उस अवैध मिलन से जन्मा बच्चा मर गया, और परमेश्वर ने उसे चेतावनी दी कि *"अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी।"* आखिरकार, उसके अपने पुत्र अबशालोम ने भी उसे मार डालने का प्रयास किया। उस बिखराव के परिमाण को मापना लगभग असम्भव है, जिसका आरम्भ छत पर से देखी गई एक फंतासी से हुआ था।

अधिकांश समय पर, हमारी दृष्टि सीधे उस सम्बन्धपरक विध्वंस के कार्य पर जाती है, जिसे हमारा पाप भड़का देता है। परन्तु यदि हम भजन संहिता अध्याय 51 के दाऊद के गीत को ध्यान से सुनें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वह इस बात को समझता था कि उसका पाप नैतिक रूप में परमेश्वर के विरुद्ध सबसे अधिक था। इसीलिए वह रो पड़ा:

मैं तो अपने अपराधों को जानता हूँ,
और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्‌टि में रहता है।
मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया,
और जो तेरी दृष्‌टि में बुरा है, वही किया है;
ताकि तू बोलने में धर्मी
और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे। (भज. 51:3-4)

नातान के द्वारा, परमेश्वर दाऊद के पाप की दुःखद प्रकृति को उजागर करता है, जो कि सोच-समझकर किया गया व्यभिचार और हत्या थी। और तब पर भी दाऊद कहता है, *"मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया।"* उसका यह कथन उस पीड़ा को अनदेखा करना नहीं है, जो उसने ऊरिय्याह और बतशेबा को पहुँचाई थी। बल्कि, वह स्वीकार करता है कि सबसे विनाशकारी मानवीय संघर्ष भी परमेश्वर के विरुद्ध एक गहरे विद्रोह से ही उत्पन्न होते हैं।

इस विषय पर हज़ारों पुस्तकें लिखी गई हैं कि रिश्ते क्यों टूटते हैं—परन्तु बाइबल सिखाती है कि रिश्ते आखिरकार इसलिए टूटते हैं, क्योंकि हम परमेश्वर से दूर हो गए हैं। यदि हम इस मूलभूत सत्य से चूक जाते हैं, तो रिश्ते बहाल करने के हमारे प्रयास, उनके नीचे छिपी आत्मिक बीमारी के बजाय केवल लक्षणों पर ही केन्द्रित रहेंगे।

मेल-मिलाप की परिभाषा

बाइबल में मेल-मिलाप को जैसे परिभाषित किया गया है, उसका अर्थ ऐसे दो पक्षों के बीच बहाली है, जो एक दूसरे से अलग हो गए थे या जिनके बीच मनमुटाव था। इसके बाइबल-आधारित अर्थ में, मेल-मिलाप का आरम्भ हमेशा परमेश्वर के द्वारा स्वयं से हमारा मेल-मिलाप करवाने से होता है, और जब परमेश्वर के साथ वह रिश्ता बहाल हो जाता है, तो केवल उसी के बाद एक-दूसरों के साथ सीधा सच्चा मेल-मिलाप हो पाता है। यह बाइबल-आधारित मेल-मिलाप के मूल तत्व को दर्शाता है, जो कि परमेश्वर के द्वारा आरम्भ की गई एक ऐसी चंगाई है, जो न केवल उसके सामने हमारी स्थिति को, बल्कि एक दूसरे के साथ हमारे रिश्तों को भी बदल देती है।

मेल-मिलाप का संस्कार

कई मसीही परम्पराओं में, मेल-मिलाप का संस्कार इसी सत्य को उजागर करता है। यह अंगीकार, पश्चाताप और परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने की आवश्यकता पर जोर देता है। इस अभ्यास के माध्यम से, विश्वासियों को यह याद दिलाया जाता है कि दूसरों के साथ मेल-मिलाप करना, सबसे पहले परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करने से जुड़ा हुआ है। जब हम उसकी दया का अनुभव करते हैं, तो हम अपने स्वयं के रिश्तों में भी दया की खोज करने में सशक्त होते हैं।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. अपने पापों को मुख्य रूप से परमेश्वर के लिए किए गए पापों के रूप में पहचानने में विफल रहने से, हम बहाली के मामले में कैसे चूक सकते हैं?
2. क्या मैं अपने स्वयं के पापों को अपने टूटे हुए रिश्तों और दूसरों के साथ होने वाले संघर्षों का कारण बहुत कम ही मानता हूँ?
3. क्या मैंने यह ध्यान दिया है कि जब मैं मसीह का अनुसरण करने में चूक जाता हूँ, तो मेरे दूसरे रिश्तों को भी अक्सर नुकसान पहुँचता है।?
4. अनुग्रह के सामान्य साधनों के साथ नियमित जुड़ाव जो कि परमेश्वर का वचन, प्रार्थना, संगति, आराधना, संस्कार हैं, मेरे रिश्तों को कैसे नया कर सकता है?
5. क्या मेरे जीवन में कोई ऐसा "नातान" है, जो प्रेम के साथ उस समय मेरा सामना करने में स्वतंत्र है, जब परमेश्वर के साथ और दूसरों के साथ मेरा रिश्ता पटरी से उतर जाए?

2

टूटे हुए रिश्तों का घमण्ड

स्वयं को पूजना

रिश्तों का टूटना, यहाँ तक कि यह मसीहियों के बीच भी इतना आम क्यों हैं? इसका उत्तर घमण्ड है—और यह हर किसी के लिए एक समस्या है। अपनी अहमियत का बढ़ा-चढ़ाकर किया गया एहसास हम सभी को इस जगत के केन्द्र के रूप में स्वयं को देखने की परीक्षा में डाल देता है। अपने पिछले जीवन के जैसी लगने वाली एक घटना में, जब मैं प्लाईमाउथ पुलिस अकादमी में एक नया रंगरूट था, तो हमारे एक प्रशिक्षक प्रतिदिन हम पर ये शब्द दोहराते थे: "आप अपने मन में एक विख्यात व्यक्ति हैं।" उन्हें नहीं पता था कि वे कितने सही थे, और न ही हमें पता था। घमण्ड हम सभी में स्वाभाविक होता है, और यदि इसका लक्ष्य स्वयं को पूजना है, तो इसके लक्षण हक जताने और स्वयं की बड़ाई करने के रूप में सामने आते हैं।

उस वाटिका में, साँप की इस प्रतिज्ञा से आदम और हव्वा बहक गए कि मना किया हुआ फल खाने से उनकी आँखें खुल जाएँगी और "तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे" (उत्प. 3:5)। उनमें महिमा पाने की भूख तो थी, परन्तु वह परमेश्वर की महिमा के लिए नहीं थी। यह हमारी अपनी भ्रष्टता की एक विशेषता है, और एक साथ परमेश्वर की महिमा करने के लक्ष्य से एक दूसरे की ओर बढ़ने के बजाय, हम स्वयं की महिमा करने के लिए एक दूसरे से दूर चले जाते हैं।

याकूब 4:1-2 एक ऐसा पाठ है, जो परामर्श देने में मित्रों और जोड़ों के बीच के झगड़ों को सुलझाने में एक भरोसेमन्द संसाधन का काम करता है, क्योंकि यह उस स्वार्थी घमण्ड को उजागर करता है, जो हमारे रिश्तों के टूटने की जड़ में होता है:

टूटे हुए भरोसे को चंगा करना:
परमेश्वर के तरीके से रिश्ते बहाल करना

> तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ से आ गए? क्या उन सुख–विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते–भिड़ते हैं? तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; इसलिये तुम हत्या करते हो। तुम डाह करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर पाते; तो तुम झगड़ते और लड़ते हो।

याकूब हमें सच्चाई का सामना करने पर विवश कर देता है। घमण्ड, और उसका चचेरा भाई अहंकार, जो दूसरों को नीचा दिखाता है, शान्ति से अधिक अपनी निजी इच्छाओं को महत्व देते हैं। याकूब हमें बताता है कि हर एक मसीही के भीतर एक लड़ाई चल रही है। यह लड़ाई हमारे पुराने, पापी स्वभाव, जिसे प्रेरित पौलुस "शरीर" कहता है, और हमारे नये स्वभाव, अर्थात् आत्मा के जीवन के बीच है। याकूब कहता है कि जब यह लड़ाई जोरों पर होती है, तो अक्सर पापी इच्छाएँ हावी हो जाती हैं, और इसका परिणाम लड़ाई-झगड़ा होता है। सरल भाषा में कहें तो, हम वही चाहते हैं, जो हम चाहते हैं, और उसे पाने के लिए हम अपने रिश्तों को बिगाड़ने के लिए भी तैयार रहते हैं।

ऐसे समय भी आते हैं जब रिश्तों का टूटना हमारी गलती से नहीं होता, और इस बारे में मैं बाद में और बात करूँगा—परन्तु जब हम स्वयं को दूसरों के साथ झगड़े में पाते हैं, तो हमें हमेशा अपनी जाँच करनी चाहिए। क्या कोई ऐसी वस्तु है, जिसे मैं इस व्यक्ति से चाहता हूँ, परन्तु वह मुझे मिल नहीं रही है? यह पैसा या सम्पत्ति जैसी कोई ठोस वस्तु हो सकती है, अथवा यह ध्यान या सम्मान जैसी रिश्तों से जुड़ी कोई बात हो सकती है। यह घमण्ड है, जो हक जताने के रूप में सामने आता है और दूसरों से उन बातों की माँग करता है, जिनके हम हकदार नहीं हैं। घमण्ड हमें पूरे संसार का वारिस बना देगा, परन्तु फिर भी हमें संतोष नहीं मिलेगा। एक अच्छे भेदिए की तरह, यदि हमारे मित्रों, परिवार या कलीसिया के लोगों के साथ हमारे रिश्ते टूट गए हैं, तो हमें पहले स्वयं से ही पूछताछ करनी चाहिए कि कहीं इसका दोषी हमारा घमण्ड तो नहीं है। और अक्सर वही इसका दोषी होता है।

सही होने की भारी कीमत

हमारे रिश्ते अक्सर तब एक ऐसी कठिन स्थिति में आ जाते हैं, जब हम यह मानने के लिए तैयार नहीं होते कि किसी बात पर हम गलत थे। बचपन में, अपने दादा-दादी के घर गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने का अर्थ *लिटिल हाउस ऑन द प्रेयरी (8RdSL 4 VaZL VU dCL 1 YHPYRL)* के एपिसोड लगातार देखते रहना था। हठीला घमण्ड, जो हमें दूसरों की बातें मान लेने से रोकता है, उसका एक मार्मिक उदाहरण उस एपिसोड में मिलता है, जिसका नाम *"सही होने की भारी कीमत" (5CL 4 RNO*

0 VZa VM9 L PUN 3 PNOa) है। गार्वे परिवार का खलिहान जल जाने के बाद, उनके पास मक्के की कोई फसल नहीं बचती कि वे उसे बेच सकें। जोनाथन और उसकी पत्नी एलिस के वैवाहिक जीवन की कड़ी परीक्षा होती है, क्योंकि जोनाथन किसी से भी सहायता लेने से स्पष्ट इन्कार कर देता है। जोनाथन का घमण्ड उसकी सोचने-समझने की शक्ति पर पर्दा डाल देता है, जिससे वह सबसे पवित्र रिश्ता भी खतरे में पड़ जाता है। यह एपिसोड हमें एक स्पष्ट शिक्षा देता है कि: उस मूर्खतापूर्ण घमण्ड से सावधान रहें, जो हमारी सबसे मूल्यवान वस्तुओं को नष्ट करने का खतरा उत्पन्न कर सकता है। क्या आपको दूसरों की बातें मान लेना कठिन लगता है? क्या आपको अक्सर अपने रिश्तों में संघर्ष का सामना करना पड़ता है, कि मानो आप ही उनके विरुद्ध हैं? क्या आपके रिश्ते, साझेदारी और आपसी प्रोत्साहन की निशानी होने के बजाय, छोटे सत्ता-संघर्ष का मामला बन गए हैं? घमण्ड केवल तभी घर में आ पाता है, जब विनम्रता को बाहर निकाल दिया गया हो।

विनम्रता

कोई भी यह मानना पसन्द नहीं करता कि वे गलत हैं। और हम जितनी देर तक अपनी ही मर्जी चलाने पर अड़े रहते हैं, हमारे लिए अपना रास्ता बदलना उतना ही कठिन हो जाता है। घमण्ड अपने पाँव जमाकर खड़ा हो जाता है, और जैसे आदम-हव्वा ने पतन के बाद एक दूसरे पर उंगली उठाई थी, वैसे ही हम भी एक दूसरे पर उंगली उठाने लगते हैं। हम अपनी जवाबदेही से बचने के लिए बहाने बनाते हैं और कतराते हैं। हम स्वयं को धर्मी ठहराने का प्रयास करते हैं। हम सच को तोड़ते-मरोड़ते हैं और ऐसी बातें गढ़कर पेश करते हैं, जिनसे हमें लाभ पहुँचे। कुछ हद तक हम दूसरों पर इसलिए दोष मढ़ देते हैं, क्योंकि हम घमण्ड से अंधे हो चुके होते हैं, परन्तु सबसे अधिक शायद इसलिए, ताकि हम स्वयं को पूजने की अपनी आदत को बनाए रखें। हम शायद ही कभी इतनी स्पष्टता के साथ यह बात स्वीकार करेंगे, परन्तु घमण्ड बड़ा ही चालाक और हठीला होता है!

यदि आप जानते हैं कि यह सच है, तो फिलिप्पियों 2:3-4 में प्रेरित पौलुस के शब्द आपको शायद हतोत्साहित कर सकते हैं। वह लिखता है:

> विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।”

टूटे हुए भरोसे को चंगा करना:
परमेश्वर के तरीके से रिश्ते बहाल करना

बाइबल-आधारित मेल-मिलाप हमें रिश्तों में आने वाले घमण्ड से निपटने का एक आदर्श तरीका देता है। भले ही हमारे साथ गलत हुआ हो, तौभी मसीही मेल-मिलाप हमें अपने स्वयं का लाभ खोजने के बजाय, विनम्र होने और दूसरों के साथ शान्ति स्थापित करने के लिए बुलाता है। मेल-मिलाप के संस्कार के माध्यम से, मसीहियों को परमेश्वर और एक दूसरे के साथ अंगीकार करने, पश्चाताप करने और रिश्ते बहाल करने का अनुग्रह मिलता है। विनम्रता का यह कार्य केवल सामाजिक शिष्टाचार का विषय नहीं है, बल्कि सुसमाचार को जीने का केन्द्र है।

जब हम बाइबल-आधारित मेल-मिलाप पर चिन्तन करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मेल-मिलाप का अर्थ केवल संघर्ष को समाप्त करना नहीं, बल्कि उस असली तालमेल को बहाल करना है, जिसे पाप ने भंग कर दिया है। जब हम घमण्ड को हावी होने देते हैं, तो हम शान्ति की सम्भावना को नष्ट कर देते हैं। परन्तु जब हम विनम्रता और मेल-मिलाप की बुलाहट को अपनाते हैं, तो हम टूटी हुई बातों को, न केवल लोगों के बीच, बल्कि अपने और परमेश्वर के बीच भी बहाल करते हैं।

एक ऐसी कलीसिया कैसी दिखेगी, जो दूसरों को ऊँचा उठाने के घमण्ड-नाशक कार्य में व्यस्त रहती हो? क्या हो यदि सही साबित होने का आकर्षण ही समाप्त हो जाए? क्या हो यदि हमारी बातचीत, अधूरी इच्छाओं को लेकर होने वाली लड़ाइयों और झगड़ों के बजाय ऐसे लोगों के बीच एक ऐसी स्थिति बन जाए, जो दूसरों को आशीष देने के लिए अपनी स्वयं की इच्छाओं को पीछे रखने के लिए दृढ़-संकल्पित हों? क्या हो यदि हम पवित्र आत्मा की इस आज्ञा का पालन करने के अवसर का आनन्द लें:

> "भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।" (रोमि. 12:10)।

वह एक ऐसी कलीसिया होगी, जहाँ स्वयं को पूजना समाप्त हो जाता है। परन्तु सबसे पहले घमण्ड का मरना आवश्यक है, और वह केवल सुसमाचार के माध्यम से ही मर सकता है:

> "और वह इस निमित्त सब के लिये मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।" (2 कुरि. 5:15)

टूटे हुए रिश्तों के सड़े हुए फर्श के नीचे छिपा घमण्ड दूर हो जाए—और हम, परमेश्वर की सहायता से, विनम्रता की एक दृढ़ नींव डालें।

इस प्रक्रिया के लिए कलीसिया में मेल-मिलाप बहुत अधिक आवश्यक है। कलीसिया वह समुदाय है, जहाँ बाइबल-आधारित मेल-मिलाप की जड़ें जमती हैं, जहाँ रिश्ते केवल मानवीय प्रयासों से नहीं, बल्कि सुसमाचार की सामर्थ्य से बहाल होते हैं। कलीसिया में मेल-मिलाप का संस्कार परमेश्वर और एक दूसरे के साथ हमारे रिश्ते बहाल करने का एक ठोस माध्यम प्रदान करता है, जो इस बात पर जोर देता है कि मेल-मिलाप मसीही विश्वास का केन्द्र है।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. जहाँ तक मैं बता सकता हूँ, मेरे रिश्ते किस हद तक लेन-देन वाले हैं? यदि ऐसा है, तो ऐसा कैसे है?
2. मैं अपने रिश्तों में स्वयं को नकारने का अनुशासन कैसे लागू कर सकता हूँ?
3. मैं किन तरीकों से जान-बूझकर अपने मित्रों, परिवार और कलीसिया के लोगों का सम्मान करने में उनसे आगे निकल सकता हूँ?
4. क्या मैं यह प्रार्थना करने का साहस करूँगा कि परमेश्वर मुझे विनम्र बनाए?
5. वे कौन सी रणनीतियाँ हैं, जो आप घमण्ड को समाप्त करने और विनम्रता को अपनाने के लिए बता सकते हैं?

3

टूटे हुए रिश्तों के बड़े दाँव

क्या आप परमेश्वर की सन्तान हैं?

पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर से प्रेम करना और पड़ोसी से प्रेम करना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसके अलावा, हमें यह भी सिखाया जाता है कि दूसरा वाला पहले वाले का एक बड़ा सबूत है। कोई भी परमेश्वर से प्रेम करने का दावा कर सकता है। परन्तु हमें कैसे पता चलेगा कि कोई परमेश्वर से प्रेम करता है या नहीं? इसका एक बड़ा संकेत यह है कि क्या हम दूसरों से प्रेम करते हैं। और इसलिए, परमेश्वर से प्रेम करने का दावा, यदि उसे भरोसेमन्द साबित करना है, तो हमें इसे अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम भरे कामों से दिखाना होगा। 1 यूह. 3:14 में प्रेरित यूहन्ना यही कह रहा है:

> *हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुँचे हैं; क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं। जो प्रेम नहीं रखता वह मृत्यु की दशा में रहता है।*

और इसी तरह, 1 यूह. 4:20 में वह कहता है:

> *यदि कोई कहे, "मैं परमेश्‍वर से प्रेम रखता हूँ," और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्‍वर से भी जिसे उसने नहीं देखा प्रेम नहीं रख सकता।*

अपने पड़ोसी से प्रेम करने के सबसे बेहतरीन उदाहरणों में से एक टूटे हुए रिश्ते बहाल करने के लिए उनकी ओर कदम बढ़ाना है। दूसरी ओर, अपने पड़ोसी से नाता तोड़ लेना, और मेल-मिलाप से इन्कार करना, घृणा का काम कहा जा सकता है। इस कारण, टूटे हुए रिश्तों के साथ हम जो कुछ करते हैं, वह या तो हमारे नये सिरे से जन्म लेने और परमेश्वर से प्रेम करने के दावे की पुष्टि करता है, या उसे

नकार देता है। दूसरे शब्दों में कहें, तो पड़ोसी से प्रेम करने से अलग होकर परमेश्वर से प्रेम करना नहीं होता। मसीही जीवन का एक मुख्य लक्ष्य, परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के हमारे दावे के बीच की खाई को पाटना है। कई बार इन दोनों के बीच एक गहरी खाई होती है, और अपने जीवन के इस क्षेत्र में सुसमाचार को अपनाने में विफल रहना खतरे से खाली नहीं है।

मुझे निश्चय है कि एक मसीही की मुख्य पहचानों में से एक पहचान यह है कि वह टूटे हुए रिश्तों के बीच शान्ति से नहीं रह सकता। परमेश्वर की एक सच्ची सन्तान, अपने सर्वोत्तम रूप में, क्षमा करने को तत्पर रहती है, अपनी गलती तुरन्त मान लेती है, और मेल-मिलाप करने के लिए उत्सुक रहती है। एक वाक्य में कहें तो, मसीही लोग मेल करानेवाले होते हैं। मत्ती 5:9 में, यीशु ने पहाड़ी उपदेश की अपनी प्रभावशाली प्रस्तावना में यही बात कही है। यह धन्य वचन केवल एक मनोवृत्ति ही नहीं, बल्कि टूटे हुए रिश्तों को बहाल करने तरीका भी बताता है:

> *"धन्य हैं वे, जो मेल करानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे।" यह प्रतिज्ञा इस बात की पुष्टि करती है कि विश्वासी के लिए मेल कराना किसी विशेषज्ञ का काम नहीं है, बल्कि इसके विपरीत, मसीहियों को आमतौर पर शान्ति स्थापित करने का काम करना चाहिए।*

उसी उपदेश में, यीशु यह उजागर करता है कि जब विश्वासियों के बीच क्षमा की बात आती है, तो क्या दाँव पर लगा होता है:

> *"इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।"* (मत्ती 6:14-15)

यह कुछ के बदले कुछ वाली बात नहीं है। परमेश्वर पापियों को इसलिए क्षमा नहीं करता, क्योंकि वे दूसरों को क्षमा करते हैं। यीशु कह रहा है कि जिन्हें क्षमा मिली है, वे क्षमा करने का अभ्यास करते हैं। परन्तु इस चेतावनी की गम्भीरता से चूक न जाएँ। यीशु कह रहा है कि "यदि तुम दूसरों को क्षमा करने के लिए तैयार नहीं हो, तो यह मत सोचो कि तुम परमेश्वर की सन्तान हो।" हममें से अधिकांश लोगों के लिए यह झकझोर देने वाली बात है। कुछ सबसे गहरे घाव परमेश्वर के लोगों से ही मिलते हैं। क्षमा करने का प्रयास करना उन सबसे कठिन कामों में से एक है, जिन्हें करने के लिए यीशु हमें

बुलाता है—और तब पर भी, यदि हम मसीही हैं, तो हम यही करते हैं, भले ही हम इसे सिद्धता के साथ न कर पाएँ। यदि हम ऐसा करने से इन्कार करते हैं, तो हमें परमेश्वर के सामने अपनी स्थिति को लेकर इतना आश्वस्त नहीं होना चाहिए।

इस खण्ड से हम यह सीखते हैं कि अपने पड़ोसियों से प्रेम करना और मेल करानेवाले के रूप में पहचाने जाना हमें कुछ हद तक इस बात का भरोसा दिलाए कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। 19वीं सदी के स्कॉटिश प्रचारक रॉबर्ट मरे मैकचेन ने हमें सुसमाचार के भरोसे के बारे में एक अद्भुत रूप से संतुलित बात कही थी: “अपने भीतर एक बार झाँकने के लिए, दस बार मसीह की ओर देखें।” सुसमाचार को स्पष्ट करने के लिए, कुछ ईश-वैज्ञानिक मण्डलियों ने आत्म-परीक्षण के विरोध में प्रतिक्रिया दी है। यह सच है कि अन्त में हमारा भरोसा सुसमाचार पर विश्वास करने से ही आता है—इस कारण, “दस बार मसीह की ओर देखें।” और तब पर भी, “अपने भीतर एक बार झाँकने” की आवश्यकता बनी रहती है, क्योंकि सच्चा विश्वास प्रेम के कार्यों के द्वारा ही सिद्ध होता है। धन्य वचन जैसे खण्डों में जिस आत्म-परीक्षण की बात कही गई है, उसे हममें से उन लोगों के लिए प्रोत्साहन का काम करना चाहिए, जो टूटे हुए रिश्ते बहाल करने के प्रयास में आगे बढ़ रहे हैं।

क्या आपका जीवन और आपकी कलीसिया सुसमाचार का प्रचार करते हैं?

इब्रानियों की पत्री का लेखक विश्वासियों के बीच शान्ति के लिए यह दिखाते हुए अपनी बात रखता है कि फूट पूरी कलीसिया के लिए कितनी हानिकारक हो सकती है। इसका दाँव इससे ऊँचा नहीं हो सकता:

> सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ। (इब्रा. 12:14-15)

पवित्र होने का एक अर्थ यह भी है कि आप अपने पड़ोसियों के साथ शान्ति से रहें। इब्रानियों का लेखक विश्वासियों के बीच एकता को ईश्वरीय लोगों की इतनी विशेष पहचान मानता है कि अपने कलीसियाई परिवार के साथ झगड़ा करना इस बात का संकेत है कि जब प्रभु वापस आएगा, तो शायद आप उसे उद्धार करने वाले रूप में “कदापि न देख” पाएँ। झगड़ालू मसीही होना एक

विरोधाभास है। जो लोग परमेश्वर के भवन में झगड़ा करने को उतावले रहते हैं, वे उसकी प्रजा नहीं हैं। वह यह बात हमारे धीरज के लिए लिखता है, कि हमारे विश्वास की आग और भी भड़क उठे, कि हम परमेश्वर के अनुग्रह से, स्वयं को और उन लोगों को सम्बोधित करें, जो भटक गए हैं, इससे पहले कि कोई कड़वी जड़ फूट निकले और खमीर की तरह पूरे शरीर में फैल जाए।

ये वचन उस बात की पुष्टि करते हैं, जो कलीसिया में आने वाली अधिकांश आपदाओं के बारे में सत्य है। वे दो, तीन, या मुट्ठी भर सदस्यों के बीच उठी एक छोटी सी चिंगारी से आरम्भ होती हैं। यहाँ तक कि सबसे मजबूत पास्टर और सदस्य भी इस परीक्षा में कि "काश यह समाप्त हो जाए" इसलिए पड़ जाते हैं, क्योंकि झगड़े-रगड़े असहज कर देते हैं। परन्तु हमें यह समझना होगा कि हमारे अपने टूटे रिश्तों को यदि ऐसे ही सुलगने के लिए छोड़ दिया जाए, तो वे एक ऐसी भीषण आग का रूप ले सकते हैं, जो पूरी कलीसिया को ही भस्म कर दे। कितनी ही असफल हो चुकी कलीसियाएँ अपने कब्र के पत्थर पर यह लिखवा सकती थीं: "100 वर्षों तक फली-फूली—और एक गंदी दृष्टि को अनदेखा करने की कारण से समाप्त हो गई।" इसकी शिक्षा बिलकुल स्पष्ट है। हमें कलीसिया की एकता को बनाए रखने के लिए पूरी लगन से काम करना होगा! पवित्रशास्त्र न केवल विश्वासियों और कलीसियाओं को यह चेतावनी देता है कि टूटे रिश्तों को अनसुलझा छोड़ने के कितने खतरे हो सकते हैं, बल्कि पवित्रशास्त्र यह भी साबित करता है कि जिन कलीसियाओं में आपसी कलह और फूट मची रहती है, वे सुसमाचार के बारे में झूठ फैला रही होती हैं। यूह. 17:20-21 में पाई जाने वाली यीशु की प्रार्थना पर विचार करें:

> मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्‍वास करेंगे, कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्‍वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।

यीशु की यह प्रार्थना कलीसिया के रूप में हमारी एकता और सुसमाचार की हमारी सामूहिक गवाही के बीच के अद्भुत जुड़ाव को प्रकट करती है। सामान्य विचार से सुसमाचार प्रचार करना केवल एक व्यक्तिगत् प्रयास के रूप में देखा जाता है—जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को जाता है। परन्तु यहाँ पर यीशु के शब्दों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। एकता में आई कलीसिया यह साबित करती है कि यीशु परमेश्वर की ओर से आया है! एकता आश्चर्यजनक रूप से सुसमाचार प्रचार करने का माध्यम है। यह बताता है कि जो कलीसिया एक दूसरे को काटने और खा जाने से पहचानी जाती है, वह

टूटे हुए भरोसे को चंगा करना:
परमेश्वर के तरीके से रिश्ते बहाल करना

सुसमाचार के पक्ष में सबसे बड़े तर्कों में से एक होने के बजाय उसके लिए एक बहुत बड़ी बाधा बन सकती है।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. क्या मैं दूसरों को क्षमा करने में, अपनी गलतियाँ मानने में, और अन्य विश्वासियों के साथ बहाली की खोज करने में धीमा हूँ? मुझे ऐसा क्यों लगता है?
2. क्या परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करने के मेरे दावे में कोई अन्तर है?
3. क्या मुझमें या मेरी कलीसिया के दूसरे सदस्यों में कड़वाहट की कोई जड़ें पनप रही हैं? क्या मैंने उनसे निपटने के लिए विश्वास, साहस और बुद्धि के लिए प्रार्थना की है?
4. जब स्थानीय कलीसिया में फूट या मनमुटाव के मामलों की बात आती है, तो क्या मैंने कभी "काश यह समाप्त हो जाए" कहा है? क्या मेरी कलीसिया में कड़वाहट और फूट की जड़ें अक्सर अनसुलझी ही रह जाती हैं? मैं इस बारे में क्या करने वाला हूँ?
5. यदि मैं टूटे हुए रिश्तों की बहाली के प्रयास में असफल रहता हूँ, तो मेरी स्थानीय कलीसिया की सुसमाचार की गवाही पर इसके क्या सम्भावित असर पड़ सकते हैं?

4

सुसमाचार: बहाली के लिए हमारा मार्गदर्शक

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, दूसरे लोगों के साथ रिश्ते बहाल करने का प्रयास करना एक मसीही के लिए कोई वैकल्पिक बात नहीं है। जैसा कि यीशु ने स्वयं प्रचार किया था, क्षमा करना शिष्यत्व की एक निशानी है, और क्षमा करने से इन्कार करना इस बात का संकेत हो सकता है कि हमें स्वयं अभी तक परमेश्वर से क्षमा नहीं मिली है। परन्तु, मसीही जीवन में रिश्ते बहाल करने का प्रयास करना इतनी मूलभूत बात क्यों है? इसके अलावा, हमसे इतनी कठोर बात की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? तो इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर ने सुसमाचार के माध्यम से उसके साथ हमारे टूटे हुए रिश्ते को बहाल कर दिया है। हमारा पूरा जीवन ही उस परमेश्वर के अनुग्रह की गवाही है, जिसने बहाली के लिए हमारी खोज की! इस कारण, सुसमाचार न केवल टूटे हुए रिश्ते बहाल करने के लिए हमारा सबसे अच्छा उदाहरण है—बल्कि यह हमारा सबसे बड़ा प्रोत्साहन भी है। सुसमाचार की विशेषताओं पर मनन करके, हम दूसरों के साथ बहाली की खोज करने के लिए तैयार और प्रेरित होते हैं।

और जब हम मेल-मिलाप के बारे में और भी गहराई से सोचने के लिए तैयार होते हैं, तो यह याद रखना लाभकारी होगा कि मसीही परम्परा में *मेल-मिलाप का संस्कार क्या है*—यह एक ऐसा काम है, जो इस बात पर जोर देता है कि परमेश्वर टूटी हुई संगति को ठीक करने को कितनी गम्भीरता से लेता है, और विश्वासियों के जीवन में बहाली कितनी महत्वपूर्ण बात है।

मेल-मिलाप

सुसमाचार का आरम्भ एक बुरे समाचार से होता है। क्योंकि परमेश्वर हमारा सृजनहार है, इसलिए वह हमारा पवित्र न्यायी भी है। जब संसार में पाप आया, तो पूरी मानवजाति पाप में डूब गई। इसके परिणामस्वरूप, हम स्वभाव से और इच्छा से पापी हैं। हमारा पाप एक पवित्र परमेश्वर के प्रति एक

बहुत बड़ा अपराध है—यह इतना बड़ा है कि इसके लिए अनन्त दण्ड की आवश्यकता पड़ती है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 6:23 में लिखा है: "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है…" यह सांसारिक और आत्मिक मृत्यु है। यह अनन्त मृत्यु है।

आगे बढ़ने से पहले, यह याद रखना सहायक होगा कि यह सब *बाइबल-आधारित मेल-मिलाप* के बड़े विषय के अन्तर्गत् आता है, जहाँ परमेश्वर सबसे पहले उसे बहाल करने के लिए आगे बढ़ता है, जिसे पाप ने नष्ट कर दिया था।

परन्तु सुसमाचार के हृदय में एक ऐसा परमेश्वर है, जो अपने शत्रुओं से प्रेम करता है। पौलुस ने रोमियों 5:8-10 में लिखा:

> परन्तु परमेश्‍वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। अत: जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्‍वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्‍वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?

यीशु इस संसार में अपने मित्रों को बचाने के लिए नहीं आया था। क्रूस पर, उसने अपने शत्रुओं के लिए—आपके और मेरे लिए परमेश्वर के क्रोध को सहा, यदि हम मसीह पर भरोसा रखते हैं। हो सकता है कि यह दावा आपको चौंका दे कि हम परमेश्वर के साथ युद्ध में हैं। सच कहूँ तो, यह आपको नाराज भी कर सकता है। परन्तु सोचिए कि भजनकार अविश्वासी संसार का वर्णन कैसे करता है:

जाति जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं,
और देश देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं?
यहोवा और उसके अभिषिक्‍त के विरुद्ध
पृथ्वी के राजा मिलकर,
और हाकिम
आपस में
सम्मति करके कहते हैं,

"आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें,
और उनकी रस्सियों को अपने ऊपर से उतार फेकें।" (भज. 2:1-3)

यही कारण है कि विश्वासियों को 2 कुरि. 5:18–19 में वर्णित *मेल-मिलाप की सेवा* सौंपी गई है, जो हमें याद दिलाती है कि स्वयं परमेश्वर ने मेल-मिलाप की पहल की, और उसका सन्देश ले जाने के लिए हमें बुलाया है।

परमेश्वर अपने उन शत्रुओं के साथ मेल क्यों करना चाहेगा, जिन्होंने उसके परोपकारी शासन के विरुद्ध रोष प्रकट किया है? यही सुसमाचार का अद्भुत काम है। यदि हम इसके उत्तर के लिए पवित्रशास्त्र में खोजें, तो हमें एक ऐसा परमेश्वर मिलता है, जिसका प्रेम हमारे विद्रोह पर विजय प्राप्त कर लेता है। यीशु ने अनन्तकाल में ही आपको क्यों चुन लिया, जबकि उसे पूरा ज्ञान था कि नये सिरे से जन्म लेने से पहले आप एक विद्रोही के रूप में जीवन बिताएँगे? उसने आपके पापों के बावजूद, अपनी दया के प्रदर्शन के रूप में और अपनी ही महिमा के लिए, आपसे प्रेम करने का चुनाव किया। और केवल यही नहीं, मेल-मिलाप का पूरा काम परमेश्वर का ही है, जैसा कि पौलुस 2 कुरि. 5:18-19 में बताता है:

> ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेलमिलाप कर लिया, और मेलमिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेलमिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उस ने मेलमिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।

जब परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप की बात आती है, तो वही पहल करता है। वह हमारे द्वारा पहले कदम उठाने की प्रतीक्षा नहीं करता, क्योंकि हम ऐसा कभी करते ही नहीं। इस बात पर हैरान हों कि सुसमाचार में, परमेश्वर उसके साथ हमारे टूटे हुए रिश्ते को बहाल करने के लिए हमारी ओर कदम बढ़ाता है। निश्चित रूप से, जब दूसरों के साथ हमारा टूटा हुआ रिश्ता बहाल करने की बात आती है, तो इसके बहुत गहरे मायने होते हैं! बस एक बात का उल्लेख करें तो... परमेश्वर के द्वारा हमारा मेल-मिलाप कराना हमारी उस आपत्ति को शान्त कर देता है कि जो लोग हमें नुकसान पहुँचाते हैं, उन्हें क्षमा नहीं किया जा सकता। पाप से भरे इस संसार में, दुष्ट पापियों के लिए जीने और मरने हेतु अपने निज पुत्र को भेजकर, परमेश्वर हमारे सामने एक विशेष तरह के प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत करता है—

जो कि बलिदानी प्रेम है। जैसा कि मेरे एक पुराने प्रशिक्षक कहा करते थे, "यह प्रेम इतना दुर्लभ है कि उसे स्वर्ग से ही लाना पड़ा।"

सारी क्षमा और बहाली के केन्द्र में *मसीह का मेल-मिलाप* है, क्योंकि केवल उसके काम के द्वारा ही हम सीखते हैं कि बहाली वास्तव में कैसे आरम्भ होती है—यह अनुग्रह, बलिदान और अयोग्य दया के साथ आती है।

यद्यपि रिश्ते उलझे हुए होते हैं, और पाप गम्भीर होता है, तौभी हमें यीशु जैसा बनने की बुलाहट मिली है, जिसने हमारे साथ मेल-मिलाप की पहल की। वास्तव में, टूटना जितना अधिक होता है, परमेश्वर के अनुग्रह का प्रदर्शन बहाली के माध्यम से उतना ही अधिक होता है। जैसा कि प्यूरिटन समुदाय के रिचर्ड सिब्स ने एक बार प्रचार किया था, "जो पाप हममें है, उसकी तुलना में मसीह में अधिक दया है।" क्या हम उद्धारकर्ता को प्रतिबिम्बित करने की इच्छा रखते हैं? तो आइए हम अपने शत्रुओं के साथ भी मेल-मिलाप करने का प्रयास करें, जिससे सुसमाचार हमसे चमक उठेगा। यदि हम पहल करने में हिचकिचाते हैं या इच्छुक नहीं हैं, तो हो सकता है कि हम सुसमाचार को पूरी तरह से न समझते हों। क्या हम पापियों के प्रति परमेश्वर से भी अधिक कठोर होने का साहस करेंगे? ऐसा कभी न हो!

धर्मी ठहराया जाना

मेल-मिलाप के हृदय में एक ऐसा परमेश्वर है, जो खोज करता है। धर्मी ठहराए जाने में, एक ऐसा परमेश्वर केन्द्र-बिंदु बन जाता है, जो क्षमा करता है। तीतुस 3:5-7 में, प्रेरित पौलुस धर्मी ठहराए जाने का वर्णन परमेश्वर के अनुग्रह के एक कार्य के रूप में करता है, जो भाग्य में एक अकल्पनीय बदलाव लाता है:

> ... तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नये जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उण्डेला। जिस से हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।

क्योंकि धर्मी ठहराया जाना और बहाली ऐसे विषय हैं, जो पवित्रशास्त्र में गहराई से जुड़े हुए हैं, और मेल-मिलाप के बारे में बाइबल के कई वचन हमें याद दिलाते हैं कि वह परमेश्वर ही है, जो पापियों के साथ शान्ति की पहल करता है।

बेंजामिन कीच, सन् 1695 में अपनी धर्म-शिक्षा-प्रश्नोत्तरी में, जिसे बैपटिस्ट धर्म-शिक्षा-प्रश्नोत्तरी के नाम से जाना जाता है, धर्मी ठहराए जाने को इस तरह परिभाषित करते हैं: "धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह का एक कार्य है, जिसमें वह हमारे सभी पापों को क्षमा करता है, और अपनी दृष्टि में हमें धर्मी के रूप में स्वीकार करता है, और यह केवल मसीह की उस धार्मिकता के कारण होता है, जो हम पर रोपी गई है, और जिसे केवल विश्वास के द्वारा प्राप्त किया गया है।" इससे पहले कि हम सुसमाचार के माध्यम से मसीह की ओर परिवर्तित हों, हमारे पाप हमारे न्यायी परमेश्वर के सामने हमें दोषी ठहराते हैं। परन्तु तब हम अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं और मसीह हमारे अपराध दूर कर देता है और हमें अपनी धार्मिकता प्रदान करता है। उस पर विश्वास करने से, हम परमेश्वर की दृष्टि में अब और दोषी नहीं माने जाते। इससे भी बढ़कर, हम अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस हैं।

बाइबल में मेल-मिलाप की परिभाषा को समझने से हमें इस आश्चर्यकर्म की और भी पूरी तस्वीर मिलती है: परमेश्वर न केवल हमारे अपराधों को मिटा देता है, बल्कि दूर हो चुके पापियों को अपने साथ बहाल संगति में वापस ले आता है।

यह ऐसा है कि मानो हम राजद्रोही के तौर पर फाँसी के तख्ते पर खड़े हों, और मंच पर हमारे अन्तिम पलों में, जब हमारे सिर पर बोरा डाला जा रहा हो, हमारी जगह मसीह स्वयं वह फंदा पहनकर लटक गया। जब हम सुसमाचार को समझते हैं, तो वह बोरा हमारे सिर से हटा दिया जाता है, और हम उसे वहाँ लटका हुआ देखते हैं, जिसने अपनी इच्छा से उस मृत्युदण्ड को सह लिया, जिसे कभी हमारे लिए ठहराया गया था, ताकि हम एक नये और बेहतर जीवन के साथ आगे बढ़ सकें।

हे मेरे विश्वासी मित्र, क्या आपने इस तथ्य को मान लिया है कि आपके पापों के बावजूद, आप परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए गए हैं? अब आप दोषी नहीं रहे, क्योंकि यीशु ने उस दण्ड को सह लिया, जिसके आप हकदार थे! परन्तु क्या आप जानते हैं कि उसने ठीक वैसा ही कलीसिया के उस साथी सदस्य के लिए भी किया है, जिससे आपने कई सप्ताहों, महीनों, या शायद वर्षों से बात नहीं की है? यह वही व्यक्ति है, जिससे बचने के लिए आप कलीसिया के गलियारों में लम्बा चक्कर लगाकर

निकलते हैं। क्या आप जानते हैं कि धर्मी ठहराए जाने के कारण, अभी भी वे जो पाप करते हैं—यहाँ तक कि वे पाप भी जो आपको नुकसान पहुँचाते हैं, परमेश्वर ने पहले ही क्षमा कर दिए हैं? यह सच है कि परमेश्वर अपने भटके हुए बच्चों को अनुशासित करता है, परन्तु जहाँ तक दण्ड की बात है, तो आप दोनों में से किसी के लिए भी अब कोई दण्ड बाकी नहीं बचा है। यीशु ने उनके लिए भी क्रोध का वह कटोरा पिया है, जो उसने आपके लिए पिया था, और अब उसमें एक बूँद भी बाकी नहीं है। मैं क्या कहना चाह रहा हूँ? जिन विश्वासियों के साथ हमने अपनी संगति तोड़ ली है, वे भी वही लोग हैं, जिनके लिए मसीह मरा। और इस बात का हमारे लिए महत्व होना चाहिए।

यही कारण है कि *बाइबल-आधारित मेल-मिलाप* इतना गहरा महत्व रखता है: यदि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमें पूरी तरह से अपने साथ बहाल कर लिया है, तो किसी अन्य विश्वासी के साथ बहाली करने से इन्कार करना, उस सुसमाचार के ही विपरीत है, जिसमें हम संजोकर रखने का दावा करते हैं।

मसीह के पुनरागमन पर, मत्ती 25 अध्याय में दर्शाए गए उस महान न्याय-सिंहासन के सामने, जब पूरे संसार को दो हिस्सों में बाँटा जाएगा, तो आप सम्भवतः परमेश्वर की भेड़ों के बीच कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होंगे। बकरियों की दृष्टि में, उस क्षण में अन्य भेड़ों से अलग होना एक अत्यन्त मूर्खता का कार्य होगा। या जैसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने मत्ती 3:12 में उसी दिन का वर्णन किया है: जिस व्यक्ति को आपने वर्षों पहले ठुकरा दिया था, वह भी आपके साथ परमेश्वर के चुने हुए और बहुमूल्य गेहूँ के रूप में उसी खलिहान में इकट्ठा किया जाएगा और ऐसा नहीं होगा कि उसे भूसे की तरह उस कभी न बुझनेवाली आग में जलाया जाए।

क्या होगा यदि हम इस बात पर चिन्तन करें कि परमेश्वर ने हमारे विरोधियों को "निर्दोष" ठहराया है, और उनके छुटकारे को सुरक्षित करने के लिए वह वैसे ही मरा, जैसे उसने हमारे लिए किया था? क्या हमारे साथ-साथ, उनके भी अनन्त जीवन के वारिस होने के इस भाग्य से, हमारी बहाली की खोज करने की इच्छा और अधिक प्रबल नहीं हो जानी चाहिए? क्या हम उन लोगों को दोषी ठहराएँगे, जिन्हें परमेश्वर ने अपने सिद्ध पुत्र की कीमत पर क्षमा कर दिया है? परमेश्वर से प्रार्थना करें कि हम भी उसके क्षमा किए हुए लोगों को वैसे ही देखें, जैसे वह स्वयं उन्हें देखता है!

गोद लेना

'गोद लेना' शब्द का उल्लेख नये नियम में केवल पाँच बार हुआ है, यद्यपि इसकी विषय-वस्तु पुराने नियम और नये नियम, दोनों में ही हर तरफ बुनी हुई है। यूहन्ना रचित सुसमाचार, मसीह में गोद लेने के एक अद्भुत उल्लेख से आरम्भ होता है:

परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं (यूह. 1:12-13)।

रोमियों 8:14-17 में पवित्र आत्मा की भूमिका पर जोर देते हुए प्रेरित पौलुस गोद लेने के सिद्धान्त को लेकर आगे बढ़ता है, और इस प्रकार इसे हमारी पवित्रता से जोड़ते हैं:

इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं; और यदि सन्तान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम उसके साथ दु:ख उठाएँ तो उसके साथ महिमा भी पाएँ।

फिर से, गोद लेने की संक्षिप्त परिभाषा के लिए लेखक कीच की धर्म-शिक्षा-प्रश्नोत्तरी एक अच्छी पुस्तिका है। "गोद लेना परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह का एक कार्य है, जिसमें हमें परमेश्वर की सन्तानों की गिनती में स्वीकार किया जाता है, और हमें उनकी सभी विशेष सुविधाओं का अधिकार प्राप्त होता है।"

जे.आई. पैकर अपनी उत्कृष्ट कृति *नोइंग गॉड (Knowing God)* में, गोद लेने के सिद्धान्त के बारे में निम्नलिखित बातें लिखते हैं: "गोद लेना, सुसमाचार के द्वारा प्रदान किया गया सर्वोच्च सौभाग्य है: यह धर्मी ठहराए जाने से भी ऊँचा है... न्यायी परमेश्वर के सामने सही होना एक बड़ी बात है, परन्तु परमेश्वर पिता के द्वारा प्रेम किया जाना और उसकी देखभाल पाना उससे भी बड़ी बात है।" यह टिप्पणी कई लोगों को और विशेष करके उन लोगों को एक आश्चर्यजनक दावे की तरह चोट पहुँचाती है, जो धर्म-सुधार के कार्य की हृदय से सराहना करते हैं। परन्तु चाहे आप पैकर की इस बात पर सहमत हों या न हों कि सुसमाचार की कौन सी विशेषता अधिक महत्वपूर्ण है, परन्तु इसमें कोई सन्देह

नहीं है कि परमेश्वर के द्वारा हमें अपनी सन्तान बनाना अपने आप में अनूठे रूप से आकर्षक है। मुझे याद है कि मैंने कई वर्षों पहले इसी तरह की एक बात सुनी थी: "धर्मी ठहराए जाने में, आप न्यायी के सामने होते हैं। गोद लिए जाने में, आपको परमेश्वर के भवन में आमंत्रित किया जाता है।" पवित्रशास्त्र के परमेश्वर के अलावा, किसी ने भी ऐसे परमेश्वर के बारे में नहीं सुना है जो स्वयं को पिता कहता हो और जो अपने पहले वाले विद्रोही प्राणियों को अपने परिवार में शामिल करता हो, और उन्हें अपने सिद्ध पुत्र के सभी अधिकार और विशेष सुविधाएँ प्रदान करता हो।

और यहीं पर *बाइबल-आधारित मेल-मिलाप* अत्यन्त व्यक्तिगत् हो जाता है, क्योंकि मेल-मिलाप पर पवित्रशास्त्र हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर की सन्तान के रूप में स्वागत किया जाना अपने आप में एक बहाल किए गए रिश्ते का कार्य है।

आप हैरान हो रहे होंगे कि यह हमें टूटे हुए रिश्तों को बहाल करने के लिए कैसे प्रेरित करता है। मैं यह तर्क देना चाहता हूँ कि जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि किसे गोद लिया जा रहा है, तो गोद लिया जाना, परमेश्वर के प्रेम का सबसे भव्य प्रदर्शन है, क्योंकि परमेश्वर हमारा उद्धार करके हमें हमारे रास्ते पर नहीं भेजता। वह अपने लिए हमारा उद्धार करता है। गोद लिया जाना हमारे प्रति परमेश्वर के सदा के लिए हमारा पिता होने के हृदय को प्रकट करता है।

एक मसीही जो गोद लिए जाने के अनुग्रह के प्रति गहरी जागरूकता के साथ मेल-मिलाप का प्रयास करता है, वह दूसरों के साथ मेल-मिलाप करने के प्रयासों में अनिच्छुक या कंजूस नहीं होता। वे थोड़ा-थोड़ा लेने-देने के दाँव नहीं लगाते। बल्कि, वे पूरी तरह से समर्पित होते हैं, और परमेश्वर की तरह, उनका लक्ष्य पूर्ण और स्थायी बहाली होता है। बहाली का उनका प्रयास दूसरे व्यक्ति के कार्यों से निर्देशित नहीं होता, बल्कि वह उनके प्रति उस प्रेम में निहित होता है, जो पापियों के प्रति परमेश्वर के प्रेम को दर्शाता है—एक ऐसा प्रेम, जो पापों और अपराधों को अनदेखा करता है और उनसे परे है। यद्यपि इस पर विचार करना कठिन है, तब पर भी इसे समझना सरल है। और केवल अनुग्रह और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से ही हम बहाली को इतने पूर्ण रूप से प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं, जैसा परमेश्वर के द्वारा हमें, अपनी सन्तानों को, गोद लेने में प्रदर्शित होता है।

पवित्रता

टूटे हुए रिश्तों की बहाली के लिए हमारे आदर्श और प्रेरक के रूप में विचार करने योग्य सुसमाचार का अन्तिम पहलू पवित्रता है। हम पवित्रता को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं: मसीह के साथ हमारी एकता के माध्यम से, पवित्र आत्मा के द्वारा हमें उत्तरोत्तर पाप के लिए मरने और धार्मिकता के लिए जीने में सक्षम बनाया जाता है। प्रेरित पौलुस 1 थिस्स. 5:23 में, हमें पवित्रता में परमेश्वर के उद्देश्य की गहरी समझ देता है:

> शान्ति का परमेश्‍वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

पौलुस यहाँ संकेत देता है कि पवित्रता एक निरन्तर चलने वाला कार्य है, क्योंकि वह न केवल थिस्सलुनीकियों के लिए पूर्ण पवित्रता की प्रार्थना कर रहा है, बल्कि वह इसे एक ऐसी स्थिति के रूप में भी वर्णित करता है, जिसमें सम्पूर्ण मनुष्यत्व भविष्य में मसीह के पुनरागमन तक निर्दोष बना रहता है। यह कैसे सम्भव होता है? यह आत्मा और वचन के द्वारा होता है। जैसे यीशु ने यूह. 17:17 में प्रार्थना की थी:

"सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।"

जब परमेश्वर का आत्मा और वचन विश्वासी के जीवन में कार्य करते हैं, तो वे उन्हें धीरे-धीरे पाप से अलग करते हैं और उन्हें धार्मिकता का जीवन जीने में सक्षम बनाते हैं और उन्हें प्रभु के दिन के लिए सुरक्षित रखते हैं, जहाँ वे मसीह के न्याय-आसन के सम्मुख निर्दोष खड़े होंगे।

यह धीमा और पवित्र आत्मा के द्वारा संचालित बदलाव पवित्रशास्त्र की उन बातों की याद दिलाता है कि बाइबल-आधारित मेल-मिलाप कोई पल भर का काम नहीं, बल्कि जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसे हमारे भीतर परमेश्वर का निरन्तर काम आकार देता है।

यह हमें बहाली की खोज करने के लिए कैसे प्रोत्साहित करता है? विश्वास के द्वारा, हम मानते हैं कि जिन लोगों ने हमारे विरुद्ध पाप किया है, उनका भी हमारी ही तरह कार्य प्रगति पर है। परमेश्वर पूरी तरह से इस बात के लिए समर्पित है कि वह उन्हें हर दिन यीशु जैसा बनाए। किसी साथी विश्वासी के विरुद्ध यह आरोप लगाना कि वह तो कभी नहीं बदलेगा, अविश्वास की घोषणा के समान है। यह

टूटे हुए भरोसे को चंगा करना:
परमेश्वर के तरीके से रिश्ते बहाल करना

अपनी सन्तानों को बदलने और उनकी रक्षा करने की परमेश्वर की सामर्थ्य पर सन्देह करता है। क्षमा की राह को आसान बनाने के लिए यह जानने से बेहतर और क्या हो सकता है कि जिस व्यक्ति ने हमें चोट पहुँचाई है, वह उसी पाप के लिए मरने की प्रक्रिया में है, और परमेश्वर का पाप शरीर के प्रति उसके मरने में उसकी देखरेख कर रहा है? यह आपको लगभग इस बात के लिए उकसाता है कि उन्होंने आपकी कितनी भी हानि क्यों न की हो, उसके बावजूद आप उनका भला चाहें। इस कारण, पवित्रता की गहरी समझ हमें उन लोगों के साथ बहाली की खोज करने के लिए अधिक इच्छुक बनाती है, जो हमें परेशान करते हैं, और यहाँ तक कि हमें चोट भी पहुँचाते हैं।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. क्या मैं यह मानता हूँ कि सुसमाचार में मेरे प्रति परमेश्वर के अनुग्रह के बिना, मैं भी उसका शत्रु होता और अनन्त दण्ड के योग्य ठहरता? इस अंगीकार से कठिन लोगों के प्रति मेरे दृष्टिकोण में क्या बदलाव आना चाहिए?
2. क्या अन्य विश्वासियों के प्रति, यहाँ तक कि जो अपने पाप में लिप्त हैं, मेरा न्याय, परमेश्वर के अपने न्याय से अलग है?
3. जब टूटे हुए रिश्ते बहाल करने की बात आती है, तो क्या मैं पूरी तरह से समर्पित हूँ, या मैं ऐसी सीमाएँ निर्धारित कर रहा हूँ, जो पूर्ण नवीनता में बाधा डालती हैं? यदि हाँ, तो ऐसा क्यों है?
4. जिन लोगों से मेरे रिश्ते टूट गए हैं, उनके प्रति मेरा दृष्टिकोण, बहाल करने की परमेश्वर की सामर्थ्य में मेरे विश्वास के बारे में क्या कहता है?
5. क्या मैं उन लोगों के लिए प्रार्थना करना आरम्भ करने को तैयार हूँ, जिन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया है, कि परमेश्वर का आत्मा उनकी पापी प्रवृत्तियों को मार डाले? उनके लिए प्रार्थना करने के द्वारा परमेश्वर मेरे हृदय को कैसे बदल सकता है?

5

जब टूटे हुए रिश्ते बहाल करना कठिन हो

बहाली की दो मुख्य श्रेणियाँ क्षमा और मेल-मिलाप हैं। यह तय करना एक आम चुनौती है कि क्या ये दोनों, या इनमें से कोई एक सम्भव है, या फिर दोनों में से कोई भी सम्भव नहीं है। आइए हम स्पष्ट हो जाएँ कि पाप और उसके प्रभाव बहुत ही घिनौने होते हैं, और कुछ अपराध इतने गम्भीर होते हैं कि पूर्ण मेल-मिलाप न तो सुरक्षित होता है और न ही समझदारी से भरा काम होता है। कुछ मामलों में तो सम्पर्क करना बिलकुल भी सम्भव नहीं होता। सही रास्ता चुनने के लिए, इसे परमेश्वर के वचन की समझदारी और आपकी स्थानीय कलीसिया के समझदार मित्रों और प्राचीनों की सलाह पर छोड़ देना चाहिए।

क्षमा

जैसा कि हमने पहले कहा, मसीही लोग उसी तरीके से क्षमा करते हैं, जैसे उन्हें स्वयं बहुत अधिक क्षमा मिली है। इसका अर्थ यह नहीं है कि यह आसान है, या हमारे हृदय हमेशा इसके लिए तैयार रहेंगे। परन्तु परमेश्वर की सहायता से, क्षमा करना सम्भव है, चाहे कोई रिश्ता कितना भी क्यों न टूट गया हो। रिश्तों में क्षमा के पीछे की यह एक मुख्य सच्चाई है, जहाँ पवित्रशास्त्र बार-बार विश्वासियों से कर्ज क्षमा करने के लिए कहता है, भले ही उसके बाद मेल-मिलाप न हो सके। कुलु. 3:12-13 में पौलुस लिखता है:

> इसलिये परमेश्‍वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो, और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।

टूटे हुए भरोसे को चंगा करना:
परमेश्वर के तरीके से रिश्ते बहाल करना

हर मामले में क्षमा को सम्भव बनाने वाली बात यह है कि यह उस व्यक्ति पर निर्भर करती है, जिसे ठेस पहुँची है, कि वह गलती करने वाले को क्षमा करे। क्षमा करने का अर्थ कर्ज को समाप्त करना है, जिसे सही अर्थों में, पाप के कारण उत्पन्न कर्ज कहा जा सकता है और इसकी पुष्टि अपराध करने वाले के पछतावे से नहीं होती। यद्यपि आदर्श रूप से कहे, तो गलती करने वाले को पछताना चाहिए, तौभी क्षमा करने का पूरा बोझ उस व्यक्ति पर होता है, जिसे ठेस पहुँची है। इसका अर्थ है कि आप किसी को तब भी क्षमा कर सकते हैं, जब वे मौजूद न हों, या ऐसी परिस्थितियों में भी क्षमा कर सकते हैं, जब उनसे सम्पर्क करना समझदारी की बात न हो।

दूसरों को क्षमा करने से बहुत बड़ी स्वतंत्रता मिलती है। हम विश्वास के साथ इस मामले में परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए क्षमा करते हैं, और चाहे गलती करने वाला इसे स्वीकार करे या न करे, हमारे कंधों से एक बोझ हट जाता है। परमेश्वर की सहायता से, हमने अपना काम पूरा कर दिया है। जब हम हर समय एक ऐसे हृदय के लिए प्रार्थना करते हैं, जो कड़वाहट से मुक्त हो, तो हम भरोसा रख सकते हैं कि परमेश्वर हमें क्षमा की स्वतंत्रता प्रदान करेगा। क्षमा करना हमेशा सम्भव है, परन्तु मेल-मिलाप करना शायद हमेशा सम्भव न हो।

मेल-मिलाप

मेल-मिलाप, क्षमा से कहीं आगे की बात है, जिसमें रिश्ते की मरम्मत करने की विशेषता भी शामिल होती है। यह बाइबल-आधारित मेल-मिलाप के बड़े विषय को दिखाता है, जहाँ बहाल संगति, परमेश्वर के द्वारा पापियों को अपने साथ बहाल करने को प्रतिबिम्बित करती है। एक मसीही का परमेश्वर के साथ रिश्ता ही मेल-मिलाप का आदर्श है। बाइबल हमें सुसमाचार के माध्यम से परमेश्वर के साथ हमारे बहाल रिश्ते के लाभों के बारे में बताने के लिए बड़े कष्ट से होकर गुजरती है। मसीही होने के नाते, हमारा दूसरों के साथ ऐसी बहाली का लक्ष्य होना चाहिए, जो परमेश्वर के साथ हमारी बहाली को दर्शाता हो। हालाँकि, जब लोगों के बीच टूटे हुए रिश्तों की बात आती है, तो हो सकता है कि ऐसा सम्भव न हो। यह रोचक बात है कि पौलुस रोमियों 12:18 की आयत को किस तरह प्रस्तुत करता है:

जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।

इस शर्त पर ध्यान दें, "जहाँ तक हो सके।" कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी हो सकती हैं, जहाँ मेल-मिलाप का प्रयास करना समझदारी नहीं होती। जब शारीरिक या यौन शोषण जैसे किसी गम्भीर पाप के कारण रिश्ते टूटे हों, या ऐसे मामले में जब हमारा हृदय परिवर्तन नहीं हुआ था, तब किसी गैर-मसीही के साथ हमारे रिश्ते थे, या ऐसे मामले में जब ऐसे लोगों के साथ रिश्ता टूटा हुआ हो, जो हमसे बहुत दूर हैं या अब इस संसार में नहीं हैं, तो केवल क्षमा करने के अलावा और कुछ न करना ही शायद परमेश्वर और मनुष्यों के सामने हमारे कर्तव्य को पूरा करे।

एक उदाहरण के रूप में, जब मेरा हृदय परिवर्तन हुआ, तो मेरे पिछले प्रेम-प्रसंग वाले जीवन की सच्चाई ने मेरे विवेक में एक विवाद को भड़का दिया। एक नाममात्र का रोमन कैथोलिक होने के नाते, मैंने अपने लिए एक अपना ही नैतिकता का ढाँचा बना रखा था और मुझे वह सही लगता था, और मैं उसी की सीमाओं के भीतर रहकर जीवन जीना चाहता था। इसके लिए मुझे कई स्त्रियों के साथ लम्बे समय तक और केवल एक ही स्त्री के साथ प्रेम-प्रसंग रखना पड़ता था, परन्तु इसमें यौन सम्बन्धों को लेकर थोड़ी-बहुत सीमाएँ थीं। जब तक मैं उनके साथ आदरपूर्वक व्यवहार करता था और उनके प्रति विश्वासयोग्य रहता था, तब तक तो मैं सब ठीक कर था। परन्तु मेरे हृदय परिवर्तन के बाद, जब मैंने अपने दो-तीन वर्ष पुराने रिश्तों की एक पूरी कतार को तोड़ा, कि मैं किसी ऐसे साथी की खोज कर सकूँ, जो मुझे अधिक रोचक लगता था और तब मुझे यह समझ आया कि मैंने उन सभी के साथ बहुत भयंकर पाप किया था। एक जवान मसीही होने के नाते, मैंने अपने अपराध-बोध को सम्भालने का प्रयास किया, परन्तु जब भी मैं शहर के किसी विशेष रेस्त्राँ में, या किसी खूबसूरत नजारे वाली जगह पर जाता था, तो यादें उमड़ पड़ती थीं और मेरे विवेक को भीतर से झकझोर देती थीं। यह सच है कि यीशु ने मेरे सारे पाप क्षमा कर दिए थे, परन्तु मेरे जीवन की यात्रा में जंग लगी पुरानी कारों की तरह पड़े हुए उन टूटे रिश्तों से भी मुझे निपटना ही था।

मैंने इस बारे में सलाह माँगी कि मुझे क्या करना चाहिए, और तब यह तय हुआ कि मैं अपनी हर पुरानी महिला-मित्र को एक सन्देश भेजूँगा, जिसमें मैं उनसे क्षमा माँगूँगा और उन्हें समझाऊँगा कि कैसे सुसमाचार ने मेरे पापों और परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति मेरी आँखें खोलीं। मुझे बहुत कम मूल्यवान उत्तर मिले, और मैं क्या ही अपेक्षा करूँ? और तब पर भी, मैंने क्षमा माँगने के लिए अपनी पूरी सामर्थ्य लगा दी। मेरी दृष्टि में, उनमें से किसी से भी आमने-सामने मिलना या क्षमा माँगने से बढ़कर अपने रिश्तों को बहाल करने का प्रयास करना मूर्खता की बात होती। परन्तु आंशिक बहाली

के मेरे प्रयासों के द्वारा, मेरे परेशान विवेक की खतरे की घण्टियाँ शान्त हो गईं, और शायद प्रभु को यह उचित लगे, जैसा प्रतीत होता है कि उसे लगा भी, कि वह क्षमा का मार्ग प्रशस्त करे। मसीही होने के नाते, परमेश्वर हमें बुला रहा है कि हम अपने जीवनों के हर जंग खाए हुए रिश्ते पर ध्यान दें। यद्यपि हो सकता है कि मेल-मिलाप सम्भव न हो, परन्तु क्षमा हमेशा सम्भव होती है, और हर प्रयास सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर की क्षमा के बारे में बताने का एक अवसर होता है।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. कौन सी बात मुझे क्षमा की खोज करने से रोक रही है—चाहे वह दूसरों को क्षमा करना हो, या उनसे मुझे क्षमा करने के लिए कहना हो?
2. क्या मुझे समझदारी से रिश्ते बहाल करने के लिए सलाह लेने की आदत है, जिसमें मेरी कलीसिया के प्राचीनों की सलाह भी शामिल हो?
3. दूसरों को क्षमा करने से मुझे किन तरीकों से आशीष मिलेगी?
4. मेल-मिलाप से मेरे और किसी दूसरे मनुष्य के बीच रिश्ता और भी मजबूत कैसे हो सकता है?
5. क्या मैं अपने रिश्ते बहाल करने की परमेश्वर की सामर्थ्य पर सन्देह कर रहा हूँ?

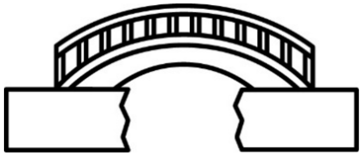

निष्कर्ष:

कैसे आरम्भ करें

संक्षेप में कहें तो चाहे वह क्षमा हो या मेल-मिलाप, हम हमेशा किसी न किसी तरह से रिश्ते बहाल करने का प्रयास कर सकते हैं। और हर उस विश्वासी के लिए जो इस बात से संघर्ष कर रहा है कि जब चोट बहुत गहरी हो, तो हम क्षमा कैसे कर सकते हैं, इसलिए, पवित्रशास्त्र हमें याद दिलाता है कि क्षमा करना भावनाओं का नहीं, बल्कि विश्वास का काम है—और यह वह काम है, जिसे परमेश्वर तब सम्भव बनाता है, जब हम उस पर भरोसा रखते हैं। एक सिद्धान्त के रूप में, हमें हमेशा परिस्थितियों के अनुसार जितना हो सके, उतना ही रिश्ते बहाल करने का प्रयास करना चाहिए, और यह जानने के लिए समझदारी की खोज करनी चाहिए कि इसका सबसे अच्छा तरीका क्या है। इस कारण परमेश्वर की यह इच्छा है कि उसके लोग किसी स्थानीय कलीसिया के सदस्य बनें। यह पवित्र लोगों के बीच ही होता है, जो "एक दूसरे का बोझ उठाने" (गला. 6:2) के लिए समर्पित होते हैं, जहाँ हमें अपने जीवन और कलीसियाई जीवन में टूटे रिश्ते बहाल करने के आवश्यक काम को करने के लिए प्रेरणा, चुनौती और हियाव मिलेगा।

यह समझना भी आवश्यक है कि बहाली का प्रयास अक्सर एक लम्बी यात्रा होती है। इस कारण, हमें परमेश्वर से केवल समझदारी के लिए ही नहीं, बल्कि धीरज के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए, जिससे कि जब हमारे प्रयास कमजोर पड़ें या विफल होते दिखें, तब भी हम आगे बढ़ते रहें। परमेश्वर मसीह की देह की एकता के लिए हमसे कहीं अधिक उत्सुक है। धीरज की आवश्यकता से जुड़ा एक और पहलू यह है कि परमेश्वर हर टूटे हुए रिश्ते पर अधिकार रखता है। भले ही बहाली के हमारे प्रयास पर सामने वाले की तरफ से बहुत कम या बिलकुल भी उत्तर न मिले, फिर भी हम भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर को ठीक-ठीक पता है कि क्या चल रहा है, और जब हम विश्वास के साथ उसकी

आज्ञा मानेंगे, तो जैसे उसे सही लगेगा, वैसे ही वह बहाली को लागू करेगा। यह भरोसा क्षमा के महत्व को और भी बढ़ा देता है, और हमें याद दिलाता है कि दूसरों को क्षमा करना कोई वैकल्पिक काम नहीं, बल्कि मसीही जीवन की मुख्य बात है।

अन्त में, हमें आनन्दित होकर और प्रका. 21 अध्याय के नये यरूशलेम की ओर ताकते हुए बहाली की खोज करनी चाहिए। नये आकाश और नयी पृथ्वी में कोई भी टूट-फूट नहीं होगी। वहाँ न तो कोई हिंसा, न आँसू और न ही कोई पाप होगा। परमेश्वर का वचन यह प्रतिज्ञा करता है कि सब बातों को, जिनमें परमेश्वर के लोग भी शामिल हैं, बहाल कर दिया जाएगा। उस दिन के आने तक, जहाँ भी सम्भव हो, टूटी बातों को बहाल करने के लिए परमेश्वर हमें बुलाता है, और ऐसा करके उस आनेवाली पूर्ण बाहली की एक छोटी, परन्तु बहुत ही अर्थपूर्ण झलक पेश करता है। इस पृथ्वी पर परमेश्वर की नयी सृष्टि के पहले फल होने के नाते, हमारे जीवन में एक दूसरे के साथ हमारे रिश्तों में परमेश्वर की बहाली के उद्देश्य की झलक दिखाई देनी चाहिए। परमेश्वर हमें ऐसा करने की सामर्थ्य और बुद्धि प्रदान करे!

THE MENTORING PROJECT

जेमी ओवेन्स, मैसाचुसेट्स के डाउनटाउन बोस्टन में स्थित ट्रेमोंट टेम्पल बैपटिस्ट चर्च में मुख्य पास्टर के रूप में सेवा करते हैं। उनका विवाह एड्रियाना से हुआ है और उनके चार बच्चे हैं।